JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

आधुनिक संस्कृत साहित्य में सौंदर्यशास्त्रीय प्रतिमान: डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री के कृतित्व का एक अनुशीलन

डॉ. रेशमा कुमारी,
संस्कृत विभाग,
कला संकाय,
दयालबाग शिक्षण संस्थान, दयालबाग, आगरा

परम्परा के अनुसार मनुष्य का सौन्दर्य मूलतः एक प्रकार का ऐन्द्रिय संवेदनों तथा मानसिक चिन्तन पर निर्भर करता है। सौन्दर्यशास्त्र दर्शन की एक शाखा है जिसका विवेचित विषय कला तथा प्रकृति का सौन्दर्य है। यह एक ऐसा विषय है, जिसमें सौन्दर्य अथवा कला व ललित कलाओं का समग्र क्षेत्र समाहित हो जाता है।

भारतीय साहित्य शास्त्र में 'सौन्दर्य' का विशेष उल्लेख प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से होता रहा है। इसकी व्युत्पत्ति के सम्बन्ध में विद्वानों ने अलग-अलग विचार व्यक्त किए हैं।

सौन्दर्य का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ है- सौन्दर्य यहाँ 'सुन्दर' का भाव वाची रूप अभिप्रेत है। सुन्दर में 'स्यञ्' प्रत्यय लगकर सौन्दर्य शब्द बनता है- सुन्दरस्य भावः सौन्दर्यम् 'सुन्द' पूर्वक 'रा' (आदाने) धातु में औणादिक 'अच्' प्रत्यय के विधान से 'सुन्दर' शब्द बनता है- सुन्दं राति इति सुन्दरः।

जहाँ कोई भाव, विचार अथवा वस्तु अच्छी प्रकार से प्रसन्न करे वहाँ भी सुन्दर शब्द प्रयुक्त होता है- सुष्ठु नन्दयति इति सुन्दरः।

संस्कृत कोशों के अन्तर्गत 'सुन्दर' शब्द की व्युत्पत्ति अनेक प्रकार से की गई है। वाचस्पत्यम् कोश के अनुसार, 'सु' उपसर्ग पूर्वक 'उन्द्' धातु में 'अरन्' प्रत्यय के मेल से 'सुन्दर' शब्द बनता है, जिसका अर्थ होता है- चित्त को द्रवीभूत करने वाला।[1]

हलायुधकोश में 'सुन्दर' शब्द की व्युत्पत्ति 'सु' उपसर्गपूर्वक 'उन्दी' (क्लेदने) धातु के विधान से 'अर' प्रत्यय के योग से निष्पन्न हुई है।[2]

इसी प्रकार एक अन्य व्युत्पत्ति- 'सुष्ठु उन्नति आद्री करोति चित्तमिति' भी प्राप्त होती है, जिसका सामान्य अभिप्राय होता है- जो चित्त को अच्छी प्रकार आद्र करता हो।[3]

ऐसे ही वामन शिवराम आप्टे ने 'सुन्दर' शब्द की व्युत्पत्ति 'सुन्द् +अरः' की है तथा प्रिय, मनोज्ञ तथा मनोहर एवं आकर्षक अर्थ भी बताये हैं।[4]

प्रकृति के मधुर, शान्त, उदात्त, कुरुप तथा भयावह आदि विभिन्न रूप हो सकते हैं। साक्षात् अनुभव को सौन्दर्यानुभूति मान लें तो कुरुप तथा भयावह अथवा विध्वंसकारी दृश्यों के विषय में जटिलता पैदा हो जाती है। उनका साक्षात् अनुभव तो वास्तव में ही क्षोभकर होता है, जबकि सौन्दर्य की अनुभूति प्रीतिकर होती है। सौन्दर्य की अनुभूति में सुन्दर पदार्थ व प्रमाता के मध्य भाव्य-भावक सम्बन्ध होता है। जिसमें कल्पना का अंश अनिवार्य रूप से रहता है। प्रकृति-सौन्दर्य के प्रत्यक्ष भावन तथा चिन्तन के कारण कला का जन्म होता है। सौन्दर्य के 4 स्तर हैं- शारीरिक सौन्दर्य, मानसिक सौन्दर्य, नैतिक सौन्दर्य एवं शुद्ध बुद्धि अथवा प्रज्ञात्मक सौन्दर्य। शुद्ध बुद्धि सौन्दर्य ही निरपेक्ष व चरम सौन्दर्य होता है।

डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री की कृतियों में सौन्दर्यबोध का अवबोध हमें अनेक रूपों में होता है। उन्होंने एक ओर अपनी कृतियों में सामाजिक समस्याओं को विषय बनाकर उन्हें आनन्द प्रदान करने वाला विषय बनाया है तो दूसरी ओर व्यंग्य के माध्यम से पारिवारिक रिश्तों, समाज व अन्य विषयों को रसरूप तक पहुँचाकर, पाठक को आनन्दानुभूति तक पहुँचाने का सहनीय कार्य किया है। कोई विषय हृदय का साधारणीकरण करने के बाद ही सहृदय पाठक को आनन्द प्रदान करने का साधन बनता है। निःसन्देह डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री जी ने अपनी रचनाओं में इस बात का पूर्णतः ध्यान रखा है।

वस्तुतः किसी भी काव्य का सौन्दर्यबोध, नवीन वर्णन कौशल एवं सृजनात्मकता कवि की कल्पनाशीलता उसका कवित्व बीजरूप विशिष्ट प्रतिमा एवं विषय से सम्बद्ध लोक अनुभूतियों, प्रचलित दन्त कथाओं, जनसामान्य में व्याप्त प्रवृतियों, युगबोध, परिस्थिति, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों के सूक्ष्म अवलोकन में समाविष्ट होता है। डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री ने अपनी कृतियों के माध्यम से वर्तमान जगत में व्याप्त सामाजिक समस्याओं व विषमताओं का चित्रण अपनी कृतियों में किया है। उनकी कृतियों में सृजनात्मकता के दर्शन पदे-पदे दृष्टव्य हैं।

डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री ने अनेक स्थानों में यथावसर सौन्दर्य बोध के अन्तर्गत शारीरिक, बौद्धिक एवं नैतिक सौन्दर्य का निरुपण किया है।

'आषाढस्य प्रथमदिवसे' की एक कथा 'प्रेम-परीक्षा' के अन्तर्गत शारीरिक-सौन्दर्य के परिप्रेक्ष्य में डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री ने नायक डॉ. देवप्रकाश के माध्यम से नायिका प्रभावती के रूप-सौन्दर्य का वर्णन किया है। डॉ. देवप्रकाश प्रभावती के नयनों की प्रशंसा करता है तथा उसके मुख को चन्द्रम के समान बताते हुए कहता है कि- **"वस्तुतो मया स्वजीवने कदाचिदपि एतावत् सुन्दरे गहने अनन्यतमे च नेत्रे नैव दृष्टे... अहम् एनाम् अतुलनीयरूपसम्पदं स्वकीये चक्षुषि स्थापयितुं प्रयतितवान्। भवती वस्तुतोऽत्यन्तमुत्कृष्टतमां रूपसम्पदां धारयति। पौर्णमास्याः शशाङ्क इव भवदीयमाननम् एतत्। भवदीयनिन्द्यं रूपसौन्दर्यं तु मां कविरूपेण स्थापितवान्।"**[5]

यद्यपि डॉ. शास्त्री का सौन्दर्यबोध प्रेम से सम्पृक्त है। यही कारण है कि उन्होंने नायिका की प्रशंसा नायक के मुखमण्डल से कराई है।

इसी प्रकार डॉ. शास्त्री ने अन्य कथाओं जैसे 'कुरुपः सत्पुरुषः' में कथा की नायिका को सौन्दर्य-सम्पन्न युवति के रूप प्रदर्शित किया है। कृष्णमूर्ति कथा का नायक उसको पत्र में सौन्दर्यशालिनी कहकर पुकारता भी है।[6] कथा का दूसरा नायक वैंकटस्वामी उसकी प्रशंसा करे नहीं थकता था। वह कहता था कि- **"नलिनि! यदा स्वकीयसौन्दर्यस्य सुगन्धं प्रवाहयन्ती मत्समक्षम् आगच्छसि तदा प्रतीयते यत् सर्वतः सुरभिमास एव समायातो वर्तते।"**[7]

इसी तरह 'आषाढ़स्य प्रथमदिवसे' की अन्य कथा 'हृदयशूलम्' में आरम्भ में लेखक स्वयं कथा की नायिका के विषय में कहते हैं कि- **"तस्मिन् समारोहे न केवलं सुनीतायाः सौन्दर्यमेव मामं प्रभावितम् अकरोत्, अपि तु तस्याः आनने विद्यमाना निष्कपटता सहजस्थितिः चापि मम हृदयं मन्त्रमुग्धम् इव अकरोत्।"**[8]

ऐसे ही कविवर शास्त्री ने 'अनाघ्रातं पुष्पम्' की कथाओं में भी रूप सौन्दर्य का वर्णन किया है। 'सीतया रावणो हतः' में लेखक स्वयं नायक है तथा वे भाभी के रूप सौन्दर्य का प्रदर्शन करते हैं[9] तथा 'अनाघ्रातं पुष्पम्' में लेखक के द्वारा वंदिता नामक युवति के रूप सौन्दर्य का वर्णन करना[10] एवं 'अद्भुतकुञ्जिका' कथा में सुखदा एक रूप सौन्दर्य युक्त युवति के रूप में चित्रित हुई है।[11]

इस प्रकार से डॉ. शास्त्री ने अनेकानेक कथाओं में रूप-सौन्दर्य का वर्णन किया है। ऐसे ही उन्होंने बौद्धिक व नैतिक सौन्दर्य निरुपण भी किया है।

'आषाढस्य प्रथमदिवसे' कृति के अन्तर्गत 'मातृगेहस्य दुर्मोहः' में बौद्धिक सौन्दर्य का सुन्दर उदहारण प्रस्तुत किया है। कथा में लेखक अपनी पत्नी के व्यवहार के कारण परेशान व दुःखी हो जाते हैं तो वह अपने मित्र द्वारा बतायी गई योजना के साथ वह अपनी बुद्धि का प्रदर्शन करके उस योजना को क्रियान्वित करते हैं और अन्त में वे अपनी बुद्धि के कारण अपनी पत्नी के व्यवहार में सुधारात्मक परिवर्तन करके अपने गृहस्थ जीवन को सुखी व आनन्दित करते हैं। वे एक स्थान पर अपनी बुद्धि का परिचय देते हुए अपनी पत्नी को योजनानुसार कहते हैं कि- **"प्रिये!... भवती...? अकस्मात् प्रातः काले एव...? सायंकाल-पर्यन्तं तु प्रतीक्षा करणीया आसीत्... अहमेव भवतीम् आनेतुं तत्र आगमिष्यम्।"**[12]

लेखक की इस कथा का मूल उद्देश्य यह है कि गृहस्थ जीवन में जो क्लेश व झगड़े होते हैं उनका मूल कारण प्रायः पत्नी का मायके पक्ष में अत्यन्त लगाव होना है, जिसके कारण वे अपने ससुराल पक्ष पर ज्यादा ध्यान नहीं दे पाती है और गृहस्थ जीवन विखराब की स्थिति पर पहुंच जाता है। इस कथा के माध्यम से उपर्युक्त समस्याओं का समाधान किस प्रकार किया जाये यह बताया गया है।

इसी प्रकार डॉ. शास्त्री ने अन्य कथा 'अयमेव ममात्मजः' में मालती देवी अपनी सास के द्वारा दिये गये बहुमूल्य हार को अपनी पुत्रबधुओं को देकर, वह अपने पास सुरक्षित रख लेती है तथा अवश्यकतानुसार वह उस हार को प्रकाश (पाला हुआ पुत्र) की पत्नी को देने का निश्चय करके अपनी बुद्धिमता का परिचय देती है।[13]

ऐसे ही कविवर शास्त्री ने अनेक कथाओं में नैतिक सौन्दर्य का निरुपण किया है। 'अनाघ्रातं पुष्पम्' के अन्तर्गत 'अनाघ्रातं पुष्पम्' नामक कथा में देवदत्त नाम का पात्र अपनी माता की सेवा को अपना कर्त्तव्य समझकर माता का समाचार मिलते ही वह अपनी माता को अत्यन्त बीमारी की स्थिति में सेवा करने हेतु जाने का निश्चय कर लेता है तथा वह लेखक को अपने स्थान पर ट्युशन कार्य के लिए नियुक्त अपने गाँव चला जाता है। इससे यह सिद्ध होता है कि देवदत्त एक नैतिक गुणों से युक्त व्यक्ति है। एक स्थान पर देवदत्त के गुणों का तब पता चलता है जब लेखक देवदत्त से वन्दिता के सौन्दर्य के विषय में पूछते हैं तो वह उनसे यह कहता है कि उस छात्रा के मुख की तरफ मैं कभी नहीं देखता तथा लेखक स्वयं उसके नैतिक गुणों की प्रशंसा करते हुए कहता है कि निश्चय ही देवदत्त अति सरल एवं सज्जन व्यक्ति है।[14]

इस तरह से डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री ने विभिन्न कथाओं में शारीरिक सौन्दर्य, बौद्धिक सौन्दर्य एवं नैतिक सौन्दर्य का निरुपण किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 वाचस्पत्यम्, पृ. 5314,
2 हलायुध कोश, पृ. 7146 हलायुध कोश, जयशंकर जोशी, हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश संस्थान
3 शब्द कल्पद्रुम, पृ. 373
4 संस्कृत-हिन्दी कोश, पृ. 11144 संस्कृत हिन्दी कोश, वामन शिवराम आप्टे, अशोक प्रकाशन, दिल्ली-6, 2006
5 आषाढस्य प्रथमदिवसे, पृ. 27-28, डॉ प्रशस्यमित्र शास्त्री, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद, 2001
6 आषाढस्य प्रथमदिवसे, पृ. 59, डॉ प्रशस्यमित्र शास्त्री, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद, 2001
7 आषाढस्य प्रथमदिवसे, पृ. 60,डॉ प्रशस्यमित्र शास्त्री, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद, 2001
8 आषाढस्य प्रथमदिवसे, पृ. 77,डॉ प्रशस्यमित्र शास्त्री, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद, 2001
9 अनाघ्रातं पुष्पम्, पृ. 4, डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री,अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद, 1994
10 अनाघ्रातं पुष्पम्, पृ. 40, डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री,अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद, 1994

11 अनाघ्रातं पुष्पम्, पृ. 93, डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद, 1994
12 आषाढस्य प्रथमदिवसे, पृ. 43,डॉ प्रशस्यमित्र शास्त्री, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद, 2001
13 अनाघ्रातं पुष्पम्, पृ. 35, डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री,अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद, 1994
14 अनाघ्रातं पुष्पम्, पृ. 38, डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद, 1994